Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/25040401V13P0007

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Apr'25
Issue–IV(I), Volume–XIII

'नदी के द्वीप' कविता में निहित आशावाद

प्रा.डॉ.मनोज सुभाष जोशी
हिन्दी विभाग प्रमुख,
सहयोगी प्राध्यापक,
श्री शिवाजी कला व वाणिज्य महाविद्यालय, अमरावती (महाराष्ट्र)

मानव सदा जीवन को समझने का दावा करता है, परंतु जीवन भर अपने ही जीवन से भलिभांति परिचित नहीं हो पाता | जीवन को हम भले ही पूर्णतः न जान पाए परंतु जीवन को जानने की जिज्ञासा हमें सदा रखनी चाहिए | यही संदेश देने वाले सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के साहित्य को यदि हम समझ पाए तो यह हमारा जीवन को जानने का ही एक सफल प्रयास कहा जाएगा |

अज्ञेय की काव्यकला की सफलता यह है कि वह परिवर्तन में विश्वास रखती है | यह परिवर्तन ही उसके विकास की प्रथम कड़ी कहा जाएगा | यह परिवर्तन पाठक के हृदय में प्रतिबिंबित होता है तथा 'स्व' को 'पर' से जोड़ने में सहायक होता है | इस संदर्भ में अज्ञेय कहते है- 'मैंने लिखा था कि कविता किसी की किसी पर अभिव्यक्ति है | कवि का अर्थ गृहिता पर घटित होता है | इस पर में एक परस्परता है, एक सामाजिक अनुबंध है | मैं जानता हूं कि मेरी कविता के पाठक बहुत अधिक नहीं रहे हैं | काव्य पढ़नेवाले अल्पसंख्य ही रहे हैं | लेकिन मेरा विश्वास है कि उसका प्रभाव रहा है क्योंकि वह जिसके द्वारा पढ़ी गई है उस पर घटित हुई है | यह प्रतिक्रिया सर्वदा अनुकूल ही हुई है, ऐसा नहीं हैं, पर जहां प्रतिकूल भी हुई, वहां घटित तो अवश्य हुई | काव्य जिसे छुए उसे परचाये ही, मुग्ध ही करें, ऐसी कोई अनिवार्यता मैं उसे नहीं उढ़ाता | वह जिसे छुए उसे बदल दे, इसीमें उसकी सफलता है | चाहे उसे बदल जाने में गृहिता का विरोधभाव भी जागे ?'(1)

अज्ञेय की रचनाएं पहले तो हमें एक प्रश्नचिह्न जैसे लगती है, परंतु बाद में उस रचना में निहित मर्म को समझने के बाद वह रचना केवल प्रश्नचिह्न नहीं रहती बल्कि हमारे जीवन के कई प्रश्नों को हल करने वाला उत्तर भी बन जाती हैं | ऐसे ही कई अनसुलझे प्रश्नों को हल करने वाली एवं जीवन रण में जूझते हुए भी टूट कर भी फिर से डटे रहने का संदेश देने वाली कविता है 'नदी के द्वीप' जिसमें उन्होंने कहा है - 'हम नदी के द्वीप है हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाय|
वह हमें आकर देती है |
हमारे कोण, गलियां, अन्तरिप, उभार, सैकत कूल,
सब गोलाईयां उसकी गढ़ी हैं |
माँ है वह |
है, इसी से हम बने हैं |'(2)

मनुष्य एक समाजशील प्राणि है, वह समाज से अछूता नहीं रह सकता और यह समाज कोई एक जाति समूह न होकर संपूर्ण मानव समुदाय है - जो देश के उत्थान में अपना योगदान देता है | मानवकल्याण, व्यक्तित्व विकास हेतु यह सामुदायिक सकारात्मकता ही हमें आगे बढ़ने में प्रेरणा प्रदान करती हैं | 'नदी के द्वीप' में यही प्रेरणा प्रतिकात्मक रूप से अभिव्यक्त हुई है |

'नदी के द्वीप' कविता दृढ़ एवं स्थिर व्यक्तित्व वाले आत्मविश्वासी, आशावान व्यक्तियों का प्रतीक है | हालांकि अज्ञेय की रचना को विश्लेषित करना उतना आसान नहीं है | रामकमल राय के शब्दों में -

'अज्ञेय वह हीरा है जिनको तराशने के लिए अज्ञेय ही समर्थ है - हीरा ही हीरे को काट सकता है |' (3)

हम उनकी रचना को पूर्णतः भले न समझ सके परंतु फिर भी उसे कुछ हद तक समझने का प्रयास तो अवश्य ही कर सकते हैं और यह लघुप्रयास भी अज्ञेय की मूल विचारधारा- 'सत्य की खोज' का परिचायक ही कहा जा सकता है |

मुक्त छंद में रचित अज्ञेय की यह कविता 'हरी घास पर क्षण भर' इस संग्रह में संकलित है | बोलचाल की भाषा के साथ ही संस्कृत शब्दों का भी कवि ने यहां प्रयोग किया है |

हम सब एक ऐसी नदी के द्वीप है, जो समाजरूपी नदी में डटे हुए हैं, तथा उससे पुर्णतक अलग भी अस्तित्व बनाए हुए हैं और उसका एक अंग भी बने हुए हैं | नदी की तेज धार में हम बहना नहीं चाहते | यदि बह जाएंगे तो चूर - चूर हो जाएंगे |हमें टूटकर बिखरना नहीं है बल्कि बिखरकर फिर से खड़ा होना है, जमना है, अपना अस्तित्व बनाना है |

दृढ़ और स्थितिशील व्यक्तित्व - जो टूट सकता है पर झुक नहीं सकता | जीवनरण में भी जीतता वह नहीं है जो जोर से वार करता है बल्कि जीतता तो वह है जो चोट खाकर फिर से खड़ा हो जाए | कुछ ऐसे ही भाव को दर्शाने वाली इस कविता में व्यक्तित्व विकास का दृढ़ स्वर तो है परंतु यह स्वर तनिक भी अभिमान का स्वर नहीं है, बल्कि अपनी निर्माणकर्ती माँ- नदी अर्थात समाज या देश को पूर्ण आदर एवं विनम्रता से अभिवादन करते हुए विकासपथ पर चलने वाला आशावादी स्वर हैं |

चार छोटे-छोटे भूखंडों में विभाजित 'नदी के द्वीप' कविता केवल व्यक्तित्व विकास को ही नहीं दर्शाती बल्कि सामूहिक मानवजाति के विकास को भी अभिव्यक्त करती हैं | अज्ञेय ने इस रचना को रचा है तो इस रचना ने भी अज्ञेय को रचने में सहायता की है, इसे मानते हुए अज्ञेय अपने एक साक्षात्कार में कहते है -

' माना की साहित्यिक कृति साहित्यकार की सृष्टि है और वह है उसका स्रष्टा | पर क्या कृति और कृतिकार में सृष्टि और सृष्टा का ही नाता है, इससे अधिक कुछ नहीं ? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कृति को रचने के प्रयत्न में साहित्यकार स्वयं भी रचा जा रहा हो ? जिस कृति को रचता - रचता साहित्यकार अपने बाहर से कटकर भीतर से जुड़ जाता है, उसके भीतर का मानव जाग उठता है, और वह दूसरों में

अपने को खोने तथा अपने में दूसरों को पाने के लिए मचल उठता है, उसे कृति ने साहित्यकार को थोड़ा भी न रचा हो, यह कैसे संभव हो सकता है ?'(4)

समाज, देश, शासन, व्यवस्था का यह दायित्व अवश्य है कि वह लोगों को विकास हेतु अवसर उपलब्ध करवाये, उनकी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि उन्नति के लिए विविध उपाययोजना करें परंतु लोगों का अर्थात हमारा भी यह कर्तव्य है कि हम अपनी क्षमता, योग्यता को बढ़ाएं | सफलता प्राप्ति की अंधी दौड़ में हम योग्यता का महत्व भूल जाते हैं |

जरा सोचिए, कि क्या हम विकसित करने वाले अवसर की खोज में रहते है ? क्या सही अवसर को पहचानते है ?और क्या पहचानकर भी हम उस अवसर को सार्थक करने के लिए पूरी तरह से तैयार रहते है ? शेर को शिकार के अवसर कई मिलते है परंतु शिकार तभी उसके हाथ आता है जब वह पूरी तैयारी से उस पर आक्रमण करता है |

हमारा दुर्भाग्य यही है कि अवसर प्राप्ति की तैयारी अधूरी होने से हम असफल हो जाते हैं, और असफलता यही दर्शाती है कि सफलता के लिए पूरे प्रयास नहीं किए गए | अज्ञेय का आशावादी स्वर इसी अवसर की तैयारी पर जोर देता है जिसमें आत्मविश्वास है, जो स्वयं अपने भाग्य का निर्माता हैं |

निष्कर्ष -

इस कविता में कवि ने मानवरूपी द्वीप तथा समाज, देशरूपी नदी का साथ अनिवार्य माना हैं | हमें अपनी माँ अर्थात मातृभूमि को सदैव स्मरण में रखना होगा | वही वास्तव में हमारा निर्माण करती है, हमें विकसित होने का अवसर प्रदान करती है | हम उससे अलग नहीं है क्योंकि नदी जैसे द्वीप के किनारे, उभार, कोण, गोलाईयों को गढ़ती हैं, उसीप्रकार समाज भी हमारे व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है | मानव समाज से अलग हमारा कोई अस्तित्व नहीं है | यदि यह समाज या राष्ट्ररुपी माता हमें बहाकर अपने से अलग कर देगी तो भी हम अपने व्यक्तित्व निर्माण के लिए छटपटाते ही रहेंगे और इस छटपटाहट को दूर करने का कार्य भी पुनःसमाज और राष्ट्ररुपी नदी को ही करना पड़ेगा | हमें अपने राष्ट्र एवं मानवसमाज रूपी नदी को सदैव स्मरण कर प्रणाम करना चाहिए जो हमें उन्नति के पथपर आगे ही आगे बढ़ने की निरंतर प्रेरणा देता हैं |

संदर्भ ग्रंथ

(1) अज्ञेय - तार सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण 1995 पृ.- 244

(2) अज्ञेय - नदी के द्वीप, हरी घास पर क्षणभर, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथमावृत्ति 2000, पृ. 553

(3) रामकमल राय- अज्ञेय पूजन की समग्रता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2003 पृ. 334

(4) डॉ रणवीर रांग्रा, हिंदी साहित्यकारों से साक्षात्कार, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली द्वितीय संस्करण, 1998 पृ. 152